श्री जी साहिब जी चले ठट्ठे से, नलिये आये पहुंचे ।
धारे ने यह बात सुनी हती, आय पहुंचा धाय के ॥१॥

आप श्री जी साहिब ठट्ठे से नलिये आ पहुंचे । धारा भाई जो खंभालिये में रहता था उसने सुन रखा था कि श्री जी नलिये आ रहे हैं वह भी दौड़ कर उनके चरणों में पहुंच गया ।

नलिये में आये मिल्या, किस्सा कहूया अपना ।
मैं खंभालिया रहता था, हुआ साथ मिने रहना ॥२॥

धारा भाई को बिहारी जी ने किस तरह निकाल रखा था उसके विषय में वह आपबीती श्री जी से कहता है । हे स्वामी जी ! मैं खंभालिये में रहता था । मैं भी सुन्दरसाथ में शामिल हो गया ।

आया सूर जी मसकत से, खंभालिये में जब ।
साथ का मण्डान चरचा का, बड़ा जो हुआ तब ॥३॥

जब सूर जी भाई मसकत से खंभालिये पहुंचा तो उसने आने पर सुन्दर साथ को घर में इकट्ठा कर चर्चा सत्संग का कार्य शुरू कर दिया ।

नया साथ केतेक आया, आया मेरा कबीला सब ।
तहां श्री राज के दीदार से, वृद्ध लीला भई तब ॥४॥

बहुत सारा नया सुन्दर साथ भी आया । मेरा कुटुम्ब कबीला भी साथ में आया । वहां श्री राजजी महाराज आवेश लीला में दर्शन देने लगे । जिससे वहां सुन्दर साथ की खूब जागनी हुई ।

मोकों आवे तहां आवेस, दिन में होवे दीदार ।
मैं श्री राज की बातें सब कहों, श्री धाम लीला विस्तार ॥५॥

मुझे श्री राजजी का आवेश आने लगा तथा सुन्दर साथ को दिन में श्री राज जी के दर्शन होने लगे। श्री राज जी का आवेश आने से मैं ब्रज, रास की लीला तथा परमधाम के २५ पक्षों का वर्णन करने लगा।

तब साथ सब मिलके, लगे पूजने मोको ।
गादी बिछाय बैठाया, मोकों सेवे साथ मों ॥६॥

तब साथ ने मिल कर गादी बिछा कर मुझे बिठा दिया और सब में मेरी पूजा प्रतिष्ठा होने लगी ।

जहां कृपा होवे श्री राज की, तहां साथ सब पूजे ।
तहां सक न रहवे काहू को, मिल सेवे चित दे ॥७॥

तब श्री जी ने उत्तर दिया कि जहां श्री राज जी महाराज की मेहर होगी तथा सुन्दरसाथ को जिससे परमधाम का अखण्ड सुख प्राप्त होगा तो उसकी पूजा प्रतिष्ठा अवश्य होगी । जब सुन्दरसाथ के कोई संशय नही रहेंगे तो वे चित्त से अवश्य उसकी सेवा करेंगे ।

Nijanand App

ए बात सुनी बिहारी जी, अकरास लगी मन ।
ए कैसी राह चली, भई माया सामिल सबन ॥८॥

तब धारा भाई ने कहा कि हे श्री जी ! यह तो आपका फुरमान है लेकिन बिहारी जी ने जैसे ही यह सुना तो उनके मन को बहुत दुःख हुआ और उन्होंने कहा कि यह कैसा सम्प्रदाय का मार्ग चल पड़ा है। धाम का धनी तो एक मात्र मैं हूं। यह दूसरा धाम धनी कहां से आ गया है ।

ए पन्थ गोलों का, हुआ सबमें नाम ।
कोई न लेवें श्री देवचन्द्रजी, मारग नाम निजधाम ॥९॥

ऐसा करने से तो हमारा सम्प्रदाय भी गोलों के पंथ जैसा हो जायेगा तथा सम्प्रदाय की बदनामी होगी। इस प्रकार सदगुरू श्री देवचन्द्र जी महाराज और परमधाम का कोई नाम ही नहीं लेगा ।

तब बुलाया नाग जी को, कह्या बिहारी जी इत ।
पाती लिखी सूरजी पर, सिताब पहुंचो इन बखत ॥१०॥

तब बिहारी जी ने अपने साले नाग जी भाई, जो उनके हजूरी थे, उनको बुला कर विचार-विमर्श किया। तत्पश्चात् सूर जी भाई को जल्दी पहुंचने के लिये पत्र लिखा ।

वह पाती सुन के दौड़िया, पहुंचा सूरजी नये नगर ।
मुलाकात करी बिहारी जी सों, डरया धारे की खातर ॥११॥

सूर जी भाई पत्र के ऐसे समाचार को पढ़कर तुरन्त नवतनपुरी चले गये। बिहारी जी के चरणों में गया तो सही परन्तु पहले से ही उसके दिल में डर था कि कहीं वे धारा भाई के बारे में मुझसे कुछ न कहें ।

पूछी खबर साथ की, सब बताई इन ।
मेहर भई साथ ऊपर, कही खुसाली मोमिन ॥१२॥

बिहारी जी महाराज ने बड़ी चतुराई के साथ सूर जी भाई से खंभालिये के सुन्दरसाथ का सब समाचार पूछा और श्री राज जी की मेहर से आवेश लीला होने पर सुन्दर साथ का आनन्द मंगल पूछा। तो सूर जी भाई ने सारी बात सच-सच कह सुनाई ।

तब बिहारी जी खण्डनी करी, तुमको माया लगी जोर ।
तुम्हारे घर मिने, किया कलिजुगें सोर ॥१३॥

तब बिहारी जी ने बहुत क्रोधित होकर सूर जी की खूब खण्डनी की तथा कहा कि धाम का धनी एक ही है या अनेक हैं। यदि धाम के धनी तुम्हारे घर आने लगे हैं तो मुझे क्या समझते हो। क्या माया में धाम धनी दो हो गये हैं ? तुम्हारे घर कलियुग घुस गया है और माया ने सबकी बुद्धि पर पर्दा डाल दिया है ।

Nijanand App

धारे को तुम काढ़ देओ, रहे ना साथ मिने ।
ना राखो इनका कबीला, जो रहे साथ मिने ॥१४॥

बस, यदि तुम परमधाम जाना चाहते हो, तो मैं धाम का धनी हूं तथा मेरा आदेश है कि धारा भाई को परिवार सहित सुन्दर साथ से भी निकाल दो तथा खंभालिये से भी निकाल दो ।

तो हमारे तुम्हारे, नाता न रहे श्री धाम ।
नातो तुम्हें निकालें साथ से, जो हम सुन्या तुम्हें ए काम ॥१५॥

यदि तुम ऐसा करोगे तो मेरा और तुम्हारा परमधाम का नाता रहेगा और मैं तुम्हें परमधाम ले चलूंगा। इसलिये धारा भाई को तुरन्त साथ में से जाकर निकाल दो । यदि हमने सुना कि वह तुम्हारे घर में रहता है तो मैं तुम्हें कभी भी परमधाम नही ले जाऊंगा ।

ए बात सूरजी सुनके, हुआ धारे से बेजार ।
हम काहे को इन्हें रखें, हम दाखिल बारे हजार ॥१६॥

सूर जी भाई ने ऐसा आदेश सुनते ही धारा भाई से बेजार होकर बिहारी जी से कहा कि हे धाम धनी ! मैं कभी भी उसे सुन्दरसाथ में नही रखूंगा लेकिन मुझे १२००० में शामिल रखना ।

मेरे नाता श्री धाम का, क्यों कर तोड़त तुम ।
हम कबीला न रखें धारे का, ना छोड़े तुम्हारे कदम ॥१७॥

हे धाम के धनी बिहारी जी महाराज ! अपने चरणों से मेरा नाता क्यों तोड़ते हैं ? हम मरते समय तक भी आपके चरणों का आसरा नही छोड़ेंगे । मैं धारा भाई तथा उसके कबीले सुन्दरसाथ को बिल्कुल ही नही रखूंगा । यह निश्चित ही जानिए ।

ए रद बदल करके, फेर आया सूरजी खंभालिये ।
धारा कबीले समेत इलाज, किया निकालने के ॥१८॥

हे श्री जी ! सूर जी भाई जब ऐसा विचार करके खंभालिया आया तो उसने आते ही सब सुन्दरसाथ से मिलकर मुझे कबीले सहित निकाल दिया ।

सब साथ को कहके, मोकों रजा दई तब ।
बेनी बाई जो थी साथ में, अरज करी साथ आगे सब ॥१९॥

सब सुन्दरसाथ से मिलकर मुझे निकाल दिया । तब मेरी धर्मपत्नी ने सुन्दरसाथ के चरणों में हाथ जोड़ कर अर्जी की ।

Nijanand App

क्या हमारा गुनाह है, कौन बुरा किया हम काम ।
जो हमको साथ से निकालत, देस ठौर ए गाम ॥२०॥

हे सुन्दर साथ जी ! चर्चा सुनाने का यदि पाप किया है तो धारा भाई ने किया है । हमसे कौनसा पाप हुआ है जिसके बदले में हमें सुन्दरसाथ से तथा खंभालिये गांव से भी आप लोग निकाल रहे हैं ।

हुकम नही बिहारी जी का, इत क्या चले साथ हुकम ।
अरज करो उत जाए के, हजूर जाओ बिहारी जी तुम ॥२१॥

तब सुन्दरसाथ ने उत्तर दिया कि धाम धनी के हुकम के सामने सुन्दरसाथ का हुकम कुछ नही कर सकता । यदि तुम्हें कोई अर्जी भी करनी है तो नवतनपुरी जाकर धाम धनी बिहारी जी के चरणों में करो।

तब मैं कबीला लेय के, गया नवतन पुरी ।
आजिजी करी बहुतक, सो चित में कछु ना धरी ॥२२॥

धारा भाई फिर कहने लगा कि हे श्री जी ! सुन्दरसाथ के ऐसा कहने पर मैं अपने कबीले को लेकर नवतनपुरी गया । मैं बहुत दिन तक हर प्रकार से अर्ज (विनती) करता रहा लेकिन धाम के धनी बिहारी जी ने मेरी एक भी नही सुनी ।

रोए धोए पीछा फिरा, आज मोहे बरस भया एक ।
विनती मैं बहुतक करी, कै किये उपाए अनेक ॥२३॥

तब मैं रो-धोकर तथा निराश होकर वापस आ गया तथा अब एक साल से दर-दर की ठोकरें खाता फिर रहा हूं । सुन्दरसाथ में शामिल रहने के लिये मैंने बहुत अर्ज (विनती) की । कई सुन्दरसाथ से कहलवाया भी, लेकिन मेरी पुकार किसी ने भी नही सुनी ।

तब इलाज मैं देखिया, है ठौर एक श्री मेहेराज ।
मैं उत जाऊं कदमों, मेहर होवे श्री राज ॥२४॥

तब मेरे जीवन का एक ही आसरा आपके चरण कमल थे और मुझे पूरा विश्वास था कि मुझे श्री राज जी महाराज की मेहर से आपके चरणों में आसरा मिलेगा ।

सुन तुम्हारी आमदानी, मोहे आनन्द भयो मन ।
मैं दौड़ा इत धाए के, आए कदमों लगा मोमिन ॥२५॥

अब जब आपका नलिये में आना सुना तो मुझे खुशी हुई । मैं तुरन्त आपके चरणों का ही आसरा लेकर आपकी शरण में आ गया हूं ।

Nijanand App

अब ज्यों जानों त्यों करो, मैं तो आए ग्रहे कदम ।
अब मैं तो कहूं ना जाऊंगा, रहों हक के तले हुकम ॥२६॥

मैं तो आपकी ही शरण में आ गया हूं। अब आप जैसा समझें, वैसा ही करें। मैं आपके चरण छोड़कर और कहीं भी नही जाऊंगा। आपका हुकम ही मेरे लिए धाम धनी का हुकम होगा।

ए बात धारे की सुन के, श्री जीयें दिया उत्तर ।
खातर जमा रख तूं, कछु दिल में न कर फिकर ॥२७॥

धाराभाई की ऐसी दुःख भरी फरियाद सुनकर श्री जी ने उत्तर दिया कि तुम मन में तसल्ली रखो तथा किसी भी प्रकार की मन में चिन्ता मत करो।

बिहारी जी इत आवत, जाए खबर देऊं मैं ।
मेहरबान होवें मुझ पर, ए काम किये सें ॥२८॥

बिहारी जी महाराज यहां मेरे पास आने वाले हैं। जब मैं उनको जागनी का सब समाचार सुनाते हुए सब धन सम्पत्ति जो मेरे पास है, उसे उनके चरणों में भेंट करूंगा तो वे मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाएंगे तब वे मेरे कहने पर तुम्हें सुन्दरसाथ में शामिल कर लेंगे।

पहिले बिहारी जी को कागद, ताको दियो जवाब ।
हम तो कहूं न आवहीं, तुम जाए के कहो सिताब ॥२९॥

बिहारी जी के पास सामल भाई जब पहला पत्र लेकर गए तो बिहारी जी ने उत्तर दिया कि जाओ। अपना पत्र वापस मेहराज ठाकुर को दे दो कि मैं बाहर कहीं भी नही जा सकता।

तब फेर विस्वनाथ को, पठाया नये नगर ।
हम चले आवत हैं, तुम रह न सको क्यों ए कर ॥३०॥

तब श्री जी ने बिहारी जी को विश्वनाथ के हाथ दोबारा पत्र लिखकर भेजा कि हे धाम के धनी ! पत्र लिखने में कुछ चूक हो गई थी। जगह-जगह के सुन्दरसाथ ने मुझे बहुत धन-सम्पत्ति, वस्त्र, सामान, जो भेंट में दिया था, वह मैं आपके चरणों में रखना चाहता हूं इसलिए आप नलिये में पधारिए। तब बिहारी जी ने पत्र में उत्तर दिया कि मैं जानता हूं कि तुम मेरी परमधाम की अंगना हो। मेरे बिना नही रह सकती। किसी भी प्रकार की चिन्ता मत करो। मैं तुरन्त आ रहा हूं।

तब बिहारी जी चले, बैठ नाव ऊपर ।
मंडई में जब उतरे, धारा दौड़ा ले खबर ॥३१॥

बिहारी जी अपने साथ संग जी, अखई, हरवंश और लाला को लेकर चले, जो उनके हजूरी, कोठारी एवं भण्डारी इत्यादि थे। वे नाव पर सवार होकर जैसे ही मंडई उतरे। धारा भाई इस बात की सूचना लेकर श्री जी के पास चल पड़ा।

Nijanand App

दई बधाई आए के, आये श्री बिहारी जी इत ।
श्री जी सुन खुसाल भये, लगे बख्सीस देने तित ॥३२॥

श्री जी के पास आकर उसने बिहारी जी के आने की बधाई दी । श्री जी बिहारी जी के आने की बधाई सुनकर धारा भाई को बख्शीश देने लगे ।

तब धारे ने कह्या, मैं एही पाऊं बख्सीस ।
कदमों बिहारीजीए के, जाए नमाऊं सीस ॥३३॥

तब धारा भाई ने उत्तर दिया कि हे श्री जी ! मुझे यही बख्शीश दो कि जब मैं बिहारी जी के चरणों में शीश झुकाकर प्रणाम करूं तो वे मेरा प्रणाम स्वीकार कर लें ।

मोकों लेओ साथ में, दाखिल करो इसलाम ।
मेरे दिल एही रहे, तुम पूरो मनोरथ काम ॥३४॥

हे श्री जी ! वे किसी तरह से भी मुझको सुन्दरसाथ तथा श्री निजानन्द सम्प्रदाय में ले लेवें । इसे आप ही पूरा कर सकते हैं ।

इन समें साथ सूरत से, आये थे आठ जने ।
ते श्री जी के दीदार को, ले चले कबीले अपने ॥३५॥

श्री जी का आना सुनकर सूरत के भी आठ सुन्दरसाथ अपने परिवार सहित नलिये में आए थे ।

एक आकिल भगवान था, और नागजी नाहना ।
बल्लभ और धन जी, ले चले कबीले अपना ॥३६॥

आकल भगवान, नागजी नाना, वल्लभ जी और धन जी, ये चारों सुन्दरसाथ अपने कबीले सहित आए थे ।

सुन्दरबाई साथ में, और बाई रतन ।
और बाई मटा लालो, ए आई भले जतन ॥३७॥

वे चारों अपनी धर्मपत्नियों, सुन्दरबाई, रतनबाई, मट्टा बाई और लालो बाई सहित थे । ये चारों भी दर्शन की चाहना करके आई थी ।

और बिहारी जी के साथ, संग जी और अखई ।
हरबंस और लाला, ए सोहबत इकट्ठी कही ॥३८॥

श्री बिहारी जी अपने साथ संग जी, अखई, हरवंश और लाला को ले कर पधारे थे ।

Nijanand App

और श्री जी की सोहबत में, एक बाई कही तेज ।
रूपा और राधाबाई, उनों को सेवा में हेज ॥३९॥

श्री जी के साथ आवासी बन्दर से तेजबाई और बाई जू राज के साथ रूपा और राधा आई थी ।

आये ठठे से संग राज के, नाथा और खेमा ।
ए आये थे पहुंचावने, रहे साथ में जमा ॥४०॥

ठट्ठे के भी कई सुन्दरसाथ श्री जी को पहुंचाने के लिये साथ में आये थे । नाथा जोशी व खेमा भाई विशेषकर पंहुचाने के लिये आये थे तथा ये सब सुन्दरसाथ श्री जी के साथ इकट्ठे आए ।

सूरजी और हरजी, थिरदास और जीवराज ।
अजबाई बहन धारे की, ए आये बिनती के काज ॥४१॥

सूर जी भाई और हर जी, थिरदास और जीवराज तथा धारा भाई और उसकी बहन अजबाई, इन सुन्दरसाथ को बिहारी जी ने धर्म से निकाल रखा था । वे अर्ज (विनती) के लिये आये थे ।

और आया हरवंस, और आया नरहर ।
संग स्त्री अपनी, आये दीदार के खातर ॥४२॥

हरवंश व नरहर, ये दोनों अपनी धर्मपत्नियों को साथ में ले कर श्री जी के दर्शनों के लिये यहां पर पधारे थे ।

आये मिले नलिये सहर में, मिल के हुये खुसाल ।
बिहारी जी का आगा लिया, दौड़े दीदार को ले हाल ॥४३॥

श्री जी ने जैसे ही बिहारी जी का आगमन सुना तो सब सुन्दर साथ को लेकर बिहारी जी को लेने के लिये आगे गए । बिहारी जी और श्री जी मिल कर बहुत प्रसन्न हुए तथा दोनों साथ में नलिये पधारे।

एक ठौर मांग लई, नलिये के कामदार पास ।
थी उनसे न्यात की हुज्जत, तिन सगाई जानी खास ॥४४॥

श्री जी ने नलिये के कामदार से जो लोहाणा जाति का ही था, इस नाते से एक सुन्दर जगह मांग ली तथा उसमें बिहारी जी तथा अन्य सुन्दरसाथ के रहने की व्यवस्था की गई ।

उन हवेली में उतरे, साथ सबे एक ठौर ।
बिहारी जी की खिजमत, सब करने लगे जोर ॥४५॥

उस हवेली के अन्दर ही बिहारी जी महाराज को पधराया गया तथा सब सुन्दरसाथ की व्यवस्था की गई । सब सुन्दरसाथ मिलकर धाम के धनी बिहारी जी की सेवा करने लगे ।

Nijanand App

अपनी जो बीतक, श्री जी साहिब जी लगे कहने ।
बिहारी जी सारी सुनी, हंसने लगे मिनों मिने ॥४६॥

श्री जी गुजरात से दीपबन्दर तथा वहां से मंडई, कपाइये, भोजनगर, नलिया, ठट्ठानगर, मस्कत बन्दर, आवासी बन्दर से होकर ठट्ठे और नलिये तक सब सुन्दरसाथ की जागनी का वृत्तान्त कहने लगे । बिहारी जी महाराज ध्यानपूर्वक सुनने लगे तथा आपस में खुशी से हंसने लगे ।

सब साथ एक ठौर हैं, सुन चरचा पाया सुख ।
सब सोक दिल के गए, जो देखे माया दुख ॥४७॥

वहां सब सुन्दरसाथ इकट्ठा रहता था । श्री जी के मुखारबिन्द की चर्चा सुनकर सब को सुख प्राप्त होता था । माया में उन्होंने जो दुःख देखे थे, वे भूल गए ।

उच्छव रसोई होने लगी, हुआ अंग उछरंग ।
सब साथ है एकठो, अंग न माय उमंग ॥४८॥

सब सुन्दर साथ के इकट्ठे रहने के कारण आपस में दिल में उमंग, उछरंग और खुशी का कोई ठिकाना नही था । सब बड़े ऊँचे भाव से रसोई करते थे ।

श्री जी साहिब जी की चरचा, होने लगी जोर ।
भाव दिखाए बचन कहें, चित माया से देवें मरोर ॥४९॥

श्री जी आवेश से चर्चा करते थे । हर प्रसंग को बड़े भाव के साथ ऐसे ढंग से वर्णन करते थे कि सब सुन्दर साथ का चित्त माया से हट कर श्री राजजी महाराज के चरणों में लगा रहे ।

रूपा राधा बाई जी, एकान्त बैठाये तिन को ।
सिखापन देने लगे, करो सेवा इन वखत मों ॥५०॥

श्री जी ने रूपा और राधा को, जिनका दिल बिहारी जी की सेवा में नही लगता था, एकान्त में बैठाकर समझाया कि मेरे सम्मान के लिए बिहारी जी महाराज को धाम धनी मान कर सेवा करो ।

श्री धाम का धनी जानियो, बिहारी जी को राज ।
इनकी आज्ञा में रहो, तो तुम मेरे किये सब काज ॥५१॥

यदि तुम बिहारी जी महाराज को धाम का धनी श्री राजजी महाराज समझ कर उनकी आज्ञा में रहोगी तो समझ लेना कि तुमने मेरा सारा कार्य कर दिया अर्थात् इनको श्री राजजी महाराज समझ कर उनकी आज्ञा में खड़ी रहो ।

Nijanand App

जो इनकी आज्ञा भंग करो, तो मेरा तुमसे नही काम ।
तो तुम से मैं जुदा होऊंगा, तुम मेरा न लीजो नाम ॥५२॥

और यदि इस समय तुमने इनकी आज्ञा को भंग किया तो मेरा तुम्हारा कोई भी सम्बन्ध नही रहेगा और मैं तुमको अलग कर दूंगा । तुम कभी भी मुझसे मिलने का प्रयास मत करना ।

इन भांत इनको, दई सिखापन जोर ।
अब मैं कह छूटत हों, तुम मेरी न काढ़ियो खोर ॥५३॥

श्री जी ने इस प्रकार इन दोनों को खूब समझाया और स्पष्ट कह दिया कि बाद में मुझे यह नही कहना कि श्री जी ने मुझे नही समझाया था ।

इन भांत सब साथ को, सिखापन लगे देने ।
सगाई श्री धाम वतन की, दई कर अपनायत अपने ॥५४॥

और सब सुन्दरसाथ जो नलिये में इकट्ठे हुए थे वे अपने ही हैं, इनसे सेवा में कोई कमी न रह जाय, ऐसा समझते हुए उन्हें भी इसी प्रकार से समझाया-बुझाया कि श्री बिहारी जी को ही धाम का धनी मान कर आदर भाव से सेवा करो ।

एक ठौर एकान्त में, करने लगे मसलहत ।
बिहारी जी और श्री जी, क्या करना आई साइत ॥५५॥

तब श्री जी और बिहारी जी महाराज ने एकान्त में बैठकर जागनी के प्रचार-प्रसार के लिए हमें क्या करना चाहिए । इस पर विचार-विमर्श किया ।

पहिनाये साथ सब को, काहू बस्तर काहू भूखन ।
काहू बासन काहू कछु, यों सेवें मोमिन ॥५६॥

बिहारी जी महाराज के साथ जो चार सुन्दरसाथ आए थे उनको श्री जी ने किसी को वस्त्र, किसी को भूषण, किसी को बर्तन तथा किसी को और सामान भेंटकर सेवा की ।

और सामा सब लेयके, धरी बिहारी जी के आगे ।
नगद बस्तर भूखण, पहिन पोतिया जुदे हुए ॥५७॥

श्री जी ने कुल सामान जो सुन्दरसाथ से प्राप्त हुआ (नकद, वस्त्र तथा भूषण) केवल अपने तन के वस्त्रों को छोड़कर उनके चरणों में रखकर प्रणाम किया ।

Nijanand App

श्री बाई जी के भूखण, और बस्तर सिनगार ।
सो सब आगे रखा, जान के धनी निरधार ॥५८॥

श्री बाई जी के सब सिनगार के वस्त्र, भूषण भी उठाकर धाम धनी के भाव से उनके चरणों में अर्पण कर दिये ।

आए आगे अरज करी, धारा साथ में दाखिल होए ।
इनका हों मैं रिनियां, तुम्हारी दई बधाई सोए ॥५९॥

बिहारी जी के आगे हाथ जोड़कर विनती की कि आपके शुभागमन पर धारा भाई ने मुझको आपके आने की बधाई दी थी । इस बधाई से धारा भाई का मैं ऋणी हूं । उसके बदले में मैंने धारा भाई को वचन दिया था कि धाम के धनी तुम्हें चरणों में ले लेंगे, इसलिए आप उन्हें सुन्दरसाथ में शामिल कर लीजिए।

मैं इनसे बचन हारिया, मोकों दई बधाई जब तुम ।
जीव निछावर इन पर करों, तो आवे न पटन्तर हम ॥६०॥

आपके आने की जो इसने बधाई दी थी उसका बदला चुकाने के लिए ही मैंने इसको यह वचन दिया था । मैं यदि अपना जीव भी उस पर न्यौछावर कर दूं तो भी बधाई की बराबरी नही हो पाएगी ।

तिस वास्ते इनको, लेओ साथ में तुम ।
इतनी अरज करत हैं, इन तुम्हारे चरनों सौंपी आतम ॥६१॥

इसलिए आप उसे सुन्दरसाथ में शामिल कर लीजिए । यह अर्जी मैं इसलिए कर रहा हूं कि धारा भाई ने अपनी आतम को आपके चरणों में सौंप दिया है ।

तब बिहारी जी ने कहया, ए अरज न सुने हम ।
यह अरज कबहूं ना करियों, जिन फेरो मेरा हुकम ॥६२॥

तब बिहारी जी ने उत्तर दिया कि हे मेहराज ठाकुर ! मैं धाराभाई के लिए अर्जी कभी भी नही सुनूंगा तथा मेरा आपको आदेश है कि कभी दुबारा इसके लिए नही कहना ।

बहुत खीझ के कहया, इनें करों न दाखिल साथ ।
इनका दुख मोहे बहुत है, याके कबहुं न पकड़ो हाथ ॥६३॥

और बहुत क्रोधित होकर कहा कि मैं न तो इसे कभी सुन्दरसाथ में शामिल करूंगा और न इसे परमधाम ले जाऊंगा । यह खंभालिये में जो धाम धनी बनकर बैठा था, उसका मुझे बहुत दुःख है । इसलिए मैं कभी भी इसें चरणों में नही लूंगा ।

Nijanand App

तब श्री जी साहिब जी नें, दिन दोय-चार बीच डार ।
फेर अरज विनती करी, तुम इनका करो विचार ॥६४॥

दो-चार दिन बीत जाने पर श्री जी ने दुवारा विनम्रता के साथ धारा भाई के लिए अर्ज की । हे धाम धनी ! धारा भाई के लिए दिल में कुछ कृपा लेकर विचार कीजिए ।

क्या गुनाह है इनका, और जो बाइयाँ दोए ।
काढ़ी इन्हें कौन गुनाह से, साथ से बाहिर सोय ॥६५॥

धारा भाई ने आपकी दृष्टि में यदि चर्चा सुनाने का गुनाह किया ही है तो उसकी धर्मपत्नी तथा दो बहनों ने क्या गुनाह किया है, जो आपने इनको भी सुन्दरसाथ में से निकाल दिया है ।

कदी गुनाह किया धारे नें, बदले और के क्यों निकालो इसलाम ।
ए तो जुलम होत है, सब दुख पावत इस ठाम ॥६६॥

यदि आपकी निगाह में चर्चा सुनाना पाप है तो उस पाप का भागीदार धारा भाई है । उसके बदले इन बहनों को अपने सम्प्रदाय से क्यों निकालते हो ? यह तो सुन्दर साथ पर बहुत अत्याचार है और यहां रहने वाले सब सुन्दरसाथ यह सब सुनकर बहुत दुःखी हो रहे हैं ।

तब बिहारी जी ने कह्या, मैं तुम्हें बरजे तब ।
तुम फेर उनकी अरज, करत हो मिल सब ॥६७॥

तब बिहारी जी ने कहा कि मैंने तुम्हें उस दिन भी धारा भाई की अर्ज करने के लिए मना किया था। मना करने पर भी आप सभी उसी की बात करते हो ।

मैं तो कबहूं न मान हों, वास्ते उन के ।
जो लाख बेर मोसों कहो, तो मेरा जवाब एक ये ॥६८॥

मैं तो कभी भी उसके बारे में अर्जी स्वीकार नही करूंगा । तुम लाख बार कहो तो भी मेरा एक ये ही जवाब है ।

तब श्री जी साहिब जी सों, सब साथ लगे कहने ।
तबियत तो तुम जानत, क्यों न डरो वास्ते अपने ॥६९॥

तब वहां ठहरे हुए सब सुन्दरसाथ ने श्री जी से विनती की कि आप धाम धनी बिहारी जी के गुस्से वाले स्वभाव को जानते ही हैं । अपने लिए भी आप डरिए ।

Nijanand App

और रूपा बाई का, ना लगे चित सेवा में ।
वहां से श्रीजीय के, सक बढ़ चली तिन से ॥७०॥

रूपा और राधा बाई का भी बिहारी जी की सेवा में दिल नही लगता था । जब श्री जी ने बिहारी जी का ऐसा निर्दयी व्यवहार देखा तो दिल में संशय आ गया कि बिहारी जी के अन्दर राज जी महाराज की मेहर नहीं है ।

महामति कहे ऐ साथ जी, ए नलिया में मजकूर ।
और भी अजूं बहुत है, सो आगे कहों जहूर ॥७१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह सब वृत्तान्त नलिये का है । अभी और भी कुछ बाकी है । उसका जिक्र करके सुनाता हूं ।

(प्रकरण २९, चौपाई-१३१७)

देख नूर चरचा रोसनी, भई बिहारी जी को दिल सक ।
ए तहकीक मसनंद मेरी लेयगा, ए बात बड़ी बुजरक ॥१॥

श्री जी के मुखारबिन्द से जागृत बुद्धि के ज्ञान की चर्चा सुन कर बिहारी जी महाराज समझ गये कि यह बहुत महत्वपूर्ण चर्चा है जिस कारण से मेहराज ठाकुर मेरी गद्दी ले लेंगे तथा कोई भी सुन्दरसाथ मुझे धाम धनी नही मानेगा ।

फेर के बैठे मसलहत करने, जाएगा एकान्त एक ठौर ।
अब क्या करना हमको, चलो ढूंढ काढ़िये साथ और ॥२॥

तब श्री जी और बिहारी जी फिर एक दिन निजानन्द सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार के प्रति विचार-विमर्श करने के लिये एकान्त में बैठे तो श्री जी ने बिहारी जी से पूछा कि अब हमें जागनी के कार्य के लिये क्या करना है । हम दोनों मिलकर सुन्दरसाथ की जागनी के लिये बाहर निकलें ।

तब श्री बिहारी जी यें कह्या, ए राह नही इसलाम ।
जो आपन माया को छोड़ के, कीजे विरक्त का काम ॥३॥

तब बिहारी जी ने उत्तर दिया कि यह हमारे सम्प्रदाय का काम नही है कि हम माया को छोड़कर बाबा बन कर बाहर निकलें । हम तो परमधाम से माया देखने के लिये आये हैं ।

जो इत हलार देस में, रह ना सको तुम ।
तो करो चाकरी कच्छ में, ए सुकन मानो हुकम ॥४॥

तब बिहारी जी ने कहा कि हे मेहराज ठाकुर ! मैं अच्छी तरह जानता हूं कि आप हलार देश में नही रह सकते । मैं यह आपको हुकम देता हूं कि कच्छ में जाकर नौकरी कीजिए और चर्चा सुनानी बिल्कुल बन्द कीजिए ।

Nijanand App